नीलो

वह वीर था जिसने अपने आपको दुश्मन के अवाले कर दिया था, जिसका खून आज भी सफेद रंग लेकर हजारों फीट उंचे पहाड़ों की गोद में बहता है। जिसके खून की गर्मी से अलग–बगल की धरती को अन्न पैदा करने के लिये भोजन मिलता है जिसके नाम का स्मरण करने से आज भी धरती माता अपना एक आंसू पोंछ लेती है।

उसेने शायद वतन की रक्षा के लिये ही नेफा में जन्म लिया था। वह सीमा जिसके इस पार उसका स्वदेश और उस पार बागी दुश्मन। नेफा की वह मासूम घाटी एक जमाने से भोले भाले और सच्चे इन्सानों को अपनी गोद में लिये बैठी थी। एक हमाने से उस शान्त घाटी में नेफा वालों की आवाजें ही गूंजती आई थीं। पहाडय़ों की ऊंची–नीची चोटिया, ऊबड–खाबड़ और समतल रास्ते, ठंड के जोर से हमेशा गिरने वाली बरफ यह सब उसके लिए मात्र एक कल्पना के समान थे, क्योंकि वह हमेश से उसका अभ्यस्त होता आया था।

हमेश की तरह रोज जब पहाड़ की चोटी से अपने उस काले बैल पर वैठकर नीली घाटी के पास आती थी लाही उसके लिए नाव लिये खड़ा होता था और बैल को बांध पास पड़े लट्ठे से, दो क्षण के लिये दोनों अपनी–अपनी थकान दूर कर लेते थे। दूर समाने उस ऊंचे वाले पहाड़ के पीछे भगवान अस्ताचल की ओर जाते होते थे। जीवन के इन सुनहरे क्षणों का लाही और नीलो के बीच सेटिमटिमाते हुए चिरागों की रोशनी बढ़ने लगती थी, लाही और नीलो के मिलन से सर्द हवायें गर्म हो जाया करती थी। ढ़ेबरी की तरुणी नीली जिसने शयद अपनी धरती को ही अब तक भारतवर्ष मान रक्खा था, सोचा करती थी–दुनिया में सब लोग इसी तरह से रहते होंगे, हर जगह इसी तरह से शाम के समय सूरज पहाड़ों के पीछे छिप जाया करता होगा, दुनिया के सारे इन्सान उसके लाही की तरह सच्चे और वफादार होंगे। हर जगह ऐसा ही शान्त वातावरण होगा, ऐसे ही झरने होंगे, ऐसे ही रास्ते, ऐसे ही शान्त घाटियां होंगी, सब कुछ ऐसा ही होगा। लाही–जिसने अपने वतन की राजधानी का सिर्फ एक बाद दर्शन किया था, जब वह नेफा से गांधी जी की समाधी के दर्शन करने आया था, दुनिया की रंगत को काफी अच्छी तरह से समझता था। इन्सान की नस्लों को खूब हच्छी तहर पहचानता था। उसने कुछ थोड़ा सा पढ़ा भी था और लोगों की जबानी, बख्त–बख्त पर देश और विदेश के बारे में सुनता भी रहता था। उसे यह भी मालूम था कि मैदानी इलाकों में रहने वाले इन्सान किस तरह के होते हैं और वह किस तरह से छल और कपट को खून में बसाये रहते हैं। सरहदपार वाले देश उनके प्रदि कैसी भावनायें रखते हैं। मगर उन सबसे दूर ये ठंडी हवायें, सदा बहार के फूल, प्रकृति की मांग में सिन्दूर की तरह लगे वह पतले–पतले झारने और इन सबके साथ एक सी आवाज से मौन रहने वाली उसकी वह प्यारी घटी, जिसका पानी खून बनकर आज भी उसकी रगों में बह रहा था।

कितनी उसे अपनी घाटी से मुहब्बत थी, कितना अपने वतन से प्यार था यह सिर्फ वह ही जानता था या कुछ–कुछ नीलो जानती थी। कई बार उसने नीलो से कहा भी था – "नीलो, नीलो जानती हो?"

"क्या"?

"मै तुमसे ज्यादा सिर्फ एक चीज से और प्यार करता हूं"

"किससे?" नीलो ने आज आश्चर्य भरे शब्दों में पूछा था।

"अपनी घाटी से, अपनी धरती से, अपने वतन से – जिसके पानी से आज भी मेरे खून में लाली है, मेरी हड्डियों में तकात है,

जिसकी अवा से मेरे फेफड़े आसानी से सांस लेते हैं, जिसके सुनहरी घूप से मेरे बदन में गर्मी आती है। नीलो! नीलो! अगर तुम मुझ से एक बार रूठ ळी जाओ तो मैं यही कहूंगा – मेरा कुछ चला गया, जिससे मुझे प्यार था।" उसने बड़ी उत्सुक्ता से कहा था।

"बस! इतना सा प्यार, जिसके लिये चोटियों की सौगन्ध खा रहे हो।"

"नीलो! इसे बस न कहो, वह स्त्री और पुरुष के सच्चे प्यार की सीमा है, इसके आगे, प्यार नहीं कहलाता।"

"मुझे नहीं मालूम था – तुम मुझ से ज्यादा भी किसी से प्यार करते हो, जाओं मैं तुमसे कभी नही .... ।" नीलो ने एक हलका सा धक्का दे दिया और मुंह पर हाथ रख कर पास वाले खम्बे से चिपट कर सिसकियां लेने लगी।

"नीलो, नीलो, समझने की कोशि करो, मैं कह क्या रहा हूं?वह तो मैं अपने जन्मजात संस्कारों के साथ लाया हूं, जो मेरी रगों में बचपन से पल रहे हैं और यह मैने इस अवस्था में संजोये हैं।"

"ओह! मैं गलती पर थी, तुम मुझ से प्यार........... ।" उसने आज फिर एक बार अपना सब कुछ उसे सर्मपण कर दिया था। गर्मी से चोटियों की बरफ भाप बनकर पिघलने लगी थी। घटी में बहने वाली नदी की आवाज तेह हो गई थी। लाही ने देखा था–दूर सामने वाले पहाड़ के पीछे लालिमा शेष हो रही थी। अन्धकार बढता जा रहा था. नीचे घाटी से टिमटिमाते हुए

चिरागों की रोशनी तेज होती जा रही थी। नीलो ने बैल का खोल दिया, लहरें मचल उठीं। किनारे के छोटे–छोटे पौधे हिल उठे।

क्वार का महीना था, पहाड़ी पर्व शुरू हो गये थे, घाटी मे बादल बैठने लगे थे। बड़ा सुहावना मौसम हो गया था। बरफ पिघल कर पहाड़ की चोटियां साफ हो गई थी, शरद उत्सव मानने के लिये आसपास के छोटे–मोटे गांवों से लोग आ–आ कर घाटी में बसने लगे थे। टीले वाले देवी के मन्दिर को सजाने के लिये लाही ने अबकी बाद अगल--बगल पहाड़ों का सीन बनाया था जिमें कटीले तारों और छोटे–छोटे बांसों की सहायता से भारत चीन की सीमा दिखलाई थी। छोटे–मोटे के खिलौनों की सहायता से उसने फौज की एक टुकड़ी दिखलाई थी। छोटे–छोटे मिट्टी के खिलौनों की सहायता से उसने फौज की एक टुकडी दिखलाई थी। इस झांकी को देखने के लिये पूरा नेफा उमड़ पड़ा था। देवी का पूजन साद दिन तक होता था। बाहर वाले बाड़े में लोक नृत्यों का आयोजन किया गया था। जिसमें नीलो ने आज स्वदेशाभिनान से पूर्ण एक छोटा सा लोकगीत गया था। जिस पर लाही ने उसे एक खंजर इनाम में दिया था। उत्सव खत्म हो जाने के बाद भी अबकी बार घाटी भर कर रह गई थी। पना नहीं क्या बाद थी जो एक हलचल सी पैदा हो गई थी। आसपास की उँचाई पर रहने वाले लोग नीचे आने लगे थे। कुछ लड़ाई के आसार नजर आने लगे थे।

जीवन में पहली बार आज उसने घाटी की इस घुमावदार सड़क पर एक अजीब से मोटर देखी थी। उसे ज्यादा तो कुछ मालूम नहीं था, उसने इतना तो जरूर सूना था – दुश्मन आ रहा है, मकान खाली करना पड़ेगा। अपने जीवन में पहली बार उसने लोगों को ऐसी पोशाकें पहने देखा था इस तरह से लगाये गये तम्बुओं और लारियों को देख कर पहले तो कुछ डर सी गई थी। नेफा की ऊँची–नीची पहाड़ियां, माल ढोने वाले एक ही शक्ल के और ऊँचान के वह खच्चर बस्ती में रहने वाले एक ही पोशाक, एक ही रंग और एक ही स्वाभाके वह सरल पुरूष जिन्ह वह छुटपन से देखती आई थी। इनके विजरीत आज शायद उन फौजी जवानों को ही देखकर अपना दुश्मन मान बैठी थी।

आज जब वह ऊपर से नीचे आई थी, कुछ घबराई हुई सी थी। उसने लाही को देखते ही कह डाला था –"दुश्मन आ रहा है, मकान खाली करना पड़ेगा।"

"सुना है री" अपनी पांचों उंगलियों को चिटकाता हुआ व मुस्करा सा दिया था। अपने पैर के अंगूठे से एक कंकड का छोटा सा टुकडा उठा कर उसने पास वाले ताल में फेंक दिया।

तुम्हे डर नहीं मालूम पड़ता?तू ने देखा है डर को?मैने तो कभी नहीं देखा"। उसने फिर एक बडा सा कंकड़ उठाकर ताल में फेंक दिया। जल में कम्पन पैदा हो गया, बनी हुई लहरें किनारे से टकरा टकरा कर चूर होने लगी।

"दुश्मन आयेगा, मकान खाली करना पड़ेगा, तुमको भी ....." नीलो ने उसी पुराने लकड़ी के खम्बे से चिपटते हुए कहा।

"खबरदार! जो जबान आगे चलाई, दुश्मन आयेगा, दुश्मन आयेगा, इन्ही दांतों से तेरी जबान काट लूंगा। दुश्मन अपने पर क्या मकान खाली किया जाता है?देख तेरे कहने से पहले ही मैने अपनी खंजर तेज कर ली है। सोपा ने बन्दूक साफ कर ली है, ले देख!" उसने बगल से एक चमकदार खंजर निकाल कर उसके आगे कर दी।

"ओह! इतनी सी खंजर पर इतना घमंड, दुश्मन के एक गोले से.....।"

"खबरदार ! जो आगे बोली, मुझे तू चाहे जो कह ले, मेरी खंजर का अपनान कर कर। अभी उसी दिन इसी खंजर से बाघ का सिर काट लाया था न, बोल।" उसने खंजर की नोकसीधी उसके समाने कर दी। आंच खाते ही घी पिघलना शुरू हो जाता है। नीलो कुछ रुआंसी सी हो गई, कुछ पहले से डरी सी भी थी, फिर आज उसने भी दो चार शब्द कह डाले थे। लकड़ी के खम्बे से मुंह भिडाकर रोने लगी।

"जी चाहता है इसी खंजर से तेरा सर काट कर नीचे खई में फेंक दूं, ताकि दुश्मन की आंखे तेरे ये आंसू न देख सकें। ये आंसू आज तेरे देश के लिये बड़े खतरनाक है। पहाड़ी लोग जिस दिन तेरे जैसे बुजदिल हो जायेंगे, सीमायें टूट जायेंगी, दुश्मन के आने से पहले ही तेरी यह धरती तुझे निगल जायेगी।"

सिसकने की आवाज तेज हो गयी तो लाही ने खंजर उठाकर बगल में रख लिया। चली जा यहां से, तुझे देखकर आज मेरी ऑखों में खून उतर रहा है। दुश्मन–दुश्मन करके आज तूने मेरा खून गर्म कर दिया है। मुझे अगर पहले मालूम होता कि तेरा दिल इतना बुजदिल है तो शायद तेरी ओर आँख उठाकर नही देखता। जा, खंजर मार दूंगा।" उसने तमतमाये हुए चेहरे से कहा। नीली फूट–फूट कर रो पड़ी, टप–टप पानी की बूंद नीचे गिरने लगीं। एक बार उसने फिर गौर से लाही की ओर देखा तो उँगलियों से ऑसू पोंछ डाले।

अच्छा, तो मैं अब कभी नहीं रोऊँगी। मगर मुझे बन्दूक चलाना भी तो नही आता है। "बन्दूक तो जरा--जरा से बच्चे भी चला सकते हैं। तू तो पूरी औरत है, देख अपने दोनों हाथों को, गौर से देख, मेरे जैसी ही दस उँगलियाँ हैं,

फिर क्यों घबराती है?"लाही ने प्यार उड़ेलते हुए कहा। बस, बस ठीक है! मुझे बन्दूक चलाना सिखा दो, फिर मैं तुम से कभी कुछ नहीं कहूंगी। अच्छा सिखा दूँगा, जरा जोर से हँस दे। नीलो हँस दी, मुंह से मादक फूल झरने लगे, ताल में रहने वाले मेंढक बोलने लगे, रोज की तरह फिर वैसा वातावरण बन गया। झरने की आवाज से गीत निकलने लगे, ताल के पानी से फिर सुगन्ध आने लगी। दूर से टिमटिमाते दिये फिर दीपावली की याद दिलाने लगे। फूलों से लदी पहाड़ी फिर फूलों से हलकी हो गयी। जीवन में एक बार फिर लाही ने नीलों का अध्ययन किया। उसका गंगाजल की तरह पवित्र हृदय, सरल स्वभाव, उसे मानवीय गुणों की याद दिलाने लगा। क्षण भर के लिये आज फिर उसे अपने देख्श के ऊपर गर्व होने लगा। उसने फिर कहा– "अगर दुश्मन आ जाये तो..?"गोली मार दूँगी, एक–एक करके सबको मौत के घाट उतार दूँगी, और जब सारी गोलियाँ खत्म हो जायेंगी तो ऊपर से नीचे फांद पड़ूँगी, अपनी बन्दूक किसी के हाथ में न जाने दूँगी। और.और.।" "शाबाश नीलो! तेरे मुंह से यही सुनना चाहता था।" उसने मारे खुशी के उसे गोद में उठाकर नचा दिया। "वतन की आजादी की खातिर तेरे द्वारा फेंके गये कंकड़ भी गोलों से ज्यादा खतरनाक साबित होंगे। आज मुझे विश्वास हो गया है, वख्त पड़ने पर पहाड़ी वाला पत्थर से पत्थर भी लड़ा सकती है।" उसने एक बड़ा सा पत्थर का टुकड़ा उठाकर ताल में फेंक दिया। पानी तिलमिला उठा। किनारे के मेंढक निकल–निकल कर दूर भागने लगे। नीलो ने आज लाही की तरफ बड़े गौर से देखा और बोली– चलो! रात ज्यादा हो रही है।" लाही ने आज फिर दूसरी बार नीलों का अध्ययन यिा । और नीचे की ओर चल पड़ा। नीलों भी जिस भय और संशय को लेकर आई थी, वहीं बिखेर कर चल पड़ी। लाही ने देखा– उसकी धँसी हुई आँख बाहर निकल आई थीं और उसका मुरझाया हुआ चेहरा खिल रहा था। धरती फिर भारी हो गई थी, कंकड़ पत्थर बन गये थे। धूल फिर मिट्टी बन गई थी। हवा कुछ ज्यादा सुगन्धित हो गई थी। चन्द पहरों के बाद उस घाटी में फिर बाघ की आवाज आई, लकड़बग्घों ने सीमा तोड़ दी, पहाड़ी में एकाएक शोरगुल और भागने की आवाज के सवाथ धुयें ने बादलों को घेर लिया। दुश्मन का मुकाबनला करने के लिये गोलियों से चट्टाना की छातियाँ चिटकने लगीं। रात्रि के अन्धकार में एक सूखा हुआ पेड़ जल उठा। पौ फटने से पहले ही नीलो ने आकर दरवाजा खटखटा दिया। "उठो! उठो!! दुश्मन आ रहा है। जल्दी उठो, मुंह–हाथ धोकर बन्दूक सम्हालो।" लाही उठा, चारपाई को आज योंही एक ओर खाई में फेंक दिया, बोला–"दुश्मन आ रहा है, सिर्फ मौत के घाट उतरने के लिये, मौत के घाट उतरने के लिये।" आज पहली बार सूर्य की उन निकलती हुई रश्मियों में लाही ने देखा–नीलों का चेहरा आज 'तमतमा' रहा था, आँखों से आँसुओं की जगह 'अंगारे' निकल रहे थे। आज उसने अपने बालों को खोल दिया था। रोज से आज कपड़े भी ज्यादा कसे पहने थी। एक हाथ में बन्दूक लिये साक्षात दुर्गा मालूम पड़ रही थी।

"लाही! बख्त ज्यादा हो रहा है, जल्दी करो, आज दुश्मन को रोकने के लिये हमारा जाना बहुत जरूरी है। वह जो घाटी में जाने के लिये टीले पर से रास्ता गया है, दुश्मन की फौज वहां से ऊपर आ सकती है।"

"नीलों–नीलों, दुनिया में अमर होने का इससे अच्छा रास्ता भगवान ने और कोई नहीं बनाया। धन्य हो भारती, धन्य हो नीलो।" लाही ने फिर आज अपनी भुजाओं में उठाकर उसे घुमा दिया।

नीलो, इस दुनिया में चन्द इन्सानों को छोड़कर बाकी सब इन्सान ऐसे हैं जो जिन्दगी में सिर्फ जीने के लिये आते हैं और वख्त आने पर कीट -पतिंगों की तरह चले जाते हैं। उन्हीं चन्द इन्सानों पर यह धरती माता नाज करती है जो वख्त--वख्त पर उसके बहते हुए आँसुओं को पोंछते रहते हैं। पहाड़ों और पहाड़ी खून की आन रखनी है, आज इतना खून किरे, धरती लाल हो जाये, नदी का पानी लाल हो जाय और घाटी दुश्मन के खून से हीली खेल ले।"

जल्दी करो, वख्त ज्यादा नहीं है, दुश्मन को रास्तों में हीरोकना है। सम्हालो बन्दूक।

"तू बन्दूक भी ले आई, बोल हर हर महादेव, हर हर महादेव!"

"जय महा काली, जय दुर्गे।"

"वीरांगने, चलो उसी तरफ, जिधर से दुश्मन आ रहा है।"